M A (FINAL) YEAR

PAPER I

CONTEMPORARY SOCIOLOGICAL Theories

(समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्धांत)

→ समाजशास्त्रीय सिद्धांतो की प्रकृति :

समाजशास्त्रीय सिद्धांत सामाजिक शोध का आधार हैं जिससे उपकल्पनाओं का परीक्षण एवं निरीक्षण किया जाता है।

समाजशास्त्रीय सिद्धांत समाज, सामाजिक जीवन व व्यवहार तथा सामाजिक घटनाओं के बारे में सामान्यीकरण होते हैं जो सामाजिक तथ्यों द्वारा निर्मित होते हैं। इसलिए ये सामान्य प्रकृति के होते हैं।

समाजशास्त्रीय सिद्धांत की विभिन्न परिभाषाओं से इसकी प्रकृति का स्पष्ट रुप से पता चल जाता है।

फेयर चाइल्ड ने 'डिक्शनरी आफ सोशिओलाजी' में समाजशास्त्रीय सिद्धांत की परिभाषा इन शब्दों में दी है:— "सामाजिक घटना के बारे में ऐसा सामान्यीकरण जो पर्याप्त रुप में वैज्ञानिकतापूर्वक स्थापित हो चुका है तथा समाजशास्त्रीय व्यवस्था के लिए आधार बन सकता है।"

मर्टन के अनुसार आज जिसे समाजशास्त्रीय सिद्धांत कहा जाता है, उसके अन्तर्गत आँकड़ों के प्रति सामान्य उन्मेष (बोध) सम्मिलित है जिन पर किसी-न-किसी प्रकार से सोच विचार करने की

आवश्यकता पड़ती है। इसके अन्तर्गत स्पष्ट तथा विशिष्ट चरों के बीच प्रमाण योग्य प्रस्तावनाओं की गणना नहीं की जाती।"
उनका कहना है कि समाजशास्त्रीय सिद्धांत का प्रयोग व्यापक रूप से व्यावसायिक समाजशास्त्रियों के समूह के सदस्यों को विभिन्न प्रकार की क्रियाओं की व्याख्या के लिये भी किया जाता है।

एबल के अनुसार:- "सिद्धांत नियमों की ~~व्याख्या~~ व्याख्या करने के लिये निर्मित अवधारणात्मक योजनाएँ हैं। सभी सिद्धांतों का सामान्य कार्य अवलोकित नियमितताओं की व्याख्या करना है।"

कैम्पबैल के अनुसार -
एक उपयोगी सिद्धांत में दो गुण होते हैं। यह ऐसा होना चाहिए कि इससे नियमों का पूर्वानुमान लगाया जा सके तथा इन नियमों की व्याख्या कुछ ऐसी उपमाओं द्वारा कर सके जो ऐसे नियमों पर आधारित हैं जो व्याख्या किये जा रहे नियमों से अधिक सामान्य हैं।"
उन्होंने समाजशास्त्रीय सिद्धान्त में व्याख्यात्मक अवधारणाओं, नियमों तथा समाज के सभी पक्षों में सामान्य रूप से उपयोगी सिद्धांतो से सम्बन्धित समाजशास्त्रीय ज्ञान को सम्मिलित किया जाता है।

उपयुक्त परिभाषाओं के आधार पर समाजशास्त्रीय सिद्धांत को -

निम्नलिखित
की प्रकृति निम्नलिखित हो सकती है।—

1. वैज्ञानिक आधार : सामाजिक सिद्धांतो के निर्माणक तत्व सामाजिक तथ्य वैज्ञानिक पद्धति द्वारा प्राप्त तथ्यों पर ही आधारित होते हैं। जिससे इसकी सहायता से आनुभविक समानताओं को ज्ञात किया जा सकता है।

2. तार्किक : समाजशास्त्रीय सिद्धांत आनुभविक तथ्यों को एक तार्किक या बौद्धिक व्यवस्था है।

3. अमूर्त : अन्य सिद्धांतो की तरह समाजशास्त्रीय सिद्धांत भी अमूर्त होते हैं। इनमें प्रयुक्त अवधारणाएँ सुस्पष्ट होती हैं तथा ~~प्रस्त~~ प्रस्तावनाएँ परस्पर सम्बन्धित होती हैं।

4. अनुभवसिद्ध : समाजशास्त्रीय सिद्धांत सामाजिक ~~से~~ शोध का आधार है जिससे उपकल्पनाओं का परीक्षण एवं निरीक्षण किया जाता है।

5. यथार्थता की व्याख्या के साधन— समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का उद्देश्य समाज, सामाजिक जीवन एवं घटनाओं को समझकर इनकी व्याख्या करना है। अतः ये साधन हैं साध्य नहीं।

6. सामान्य प्रकृति : समाजशास्त्रीय सिद्धांत समाज एवं सामाजिक जीवन, घटनाओं

का सामान्यीकरण होते है इसलिए ये सामान्य प्रकृति के होते हैं।

7. सार्वभौमिक : समाजशास्त्रीय सिद्धांतों पर स्थान एवं काल का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है।

8. मूल्यों की दृष्टि से तटस्थ: समाजशास्त्रीय सिद्धांत मूल्यों से मुक्त होते है क्योंकि ये अच्छे या बुरे का वर्णन नहीं करते।

अतः स्पष्ट है कि समाजशास्त्रीय सिद्धांत जो कि सामाजिक यथार्थ को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार है; वैज्ञानिक पद्धति के साथ ही साथ अवैज्ञानिक पद्धतियों का भी समावेश है। जैसे कि यह विश्लेषणात्मक होते हैं। दूसरा यह कि समाजशास्त्रीय सिद्धांतो का परीक्षण नहीं हो सकता, तीसरा इसकी भविष्यवाणियाँ अस्पष्ट होती है। इसमें साधारणीकरण सम्भव है परन्तु विशिष्टता का स्तर सम्भव नहीं हो पाता है।

उपर्युक्त चर्चा में यह बात स्पष्ट है कि —

1- सिद्धांत का काम सामाजिक प्रघटना को समझना व उसकी व्याख्या करना है।
2. सिद्धांतो का परीक्षण सम्भव होना चाहिए।
3. सिद्धान्तीकरण एक प्रक्रिया है जिसका कोई अन्तिम चरण बिन्दु नहीं है।